बुद्धवर्ष 2551, कार्तिक पूर्णिमा, 24 नवंबर, 2007 वर्ष 37 अंक 5

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

ते झायिनो साततिका, निच्चं दळ्हपरक्कमा।
फुसन्ति धीरा निब्बानं, योगक्खेमं अनुत्तरं॥
धम्मपद- २३, अप्पमादवग्गो

वे सतत ध्यान करने वाले, नित्य दृढ़ पराक्रम करने वाले, धीर पुरुष उत्कृष्ट योगक्षेम वाले निर्वाण को प्राप्त (अर्थात, इसका साक्षात्कार) कर लेते हैं।

(बुद्ध-चारिका)

ऋषि कालदेवल

ऋषि कालदेवल (असित देवल) उन दिनों का एक वयोवृद्ध प्रसिद्ध ब्राह्मण था। वह शाक्य और कोलिय, दोनों गणराज्यों का राजपुरोहित था। दोनों ही राज्यों में बहुत सम्मानित था, पूज्य था।

ब्राह्मण होते हुए भी उस पर श्रमण परंपरा का गहरा प्रभाव था। उसने श्रमण परंपरा के गहरे आठों ध्यान सीखे थे। इससे उसे अनेक दिव्य ऋद्धियां प्राप्त हुयी थीं। इस कारण भी वह कीर्तिमान था, क्योंकि ऋद्धिमान था।

अपने यजमानों शाक्य और कोलियों में रक्तशुद्धि की कठोर परंपरा उसने देखी थी। अतः ब्राह्मणों की रक्तशुद्धि का मिथ्या अहंकार उसे स्वीकार्य नहीं था। श्रमण परंपरा भी ब्राह्मणों की रक्तशुद्धि को नहीं स्वीकारती थी। एक बार एक श्रमण का भेष बना कर उसने कुछ ब्राह्मण तपस्वियों को यह कह कर फटकारा था कि तुम्हारी सात पीढ़ियों की रक्तशुद्धि का अहंकार मिथ्या है, सही नहीं है। इस बारे में उनका भ्रम भंग किया।

जब उसके यजमान शाक्यराज शुद्धोदन के यहां सिद्धार्थ का जन्म हुआ तब अपने ऋद्धिबल से यह जाना कि देवताओं में इस जन्म पर खुशियां मनायी जा रही हैं। अतः वह शुद्धोदन से मिलने आया, जिससे कि नवजात शिशु को देख सके। उसने जब शिशु को देखा तब उसके शरीर पर महापुरुष के लक्षण देख कर आश्वस्त हो गया कि यह बड़ा होकर सचमुच सम्यक संबुद्ध बनेगा। यह जान कर वह प्रसन्नता से खिलखिला उठा कि इसके द्वारा लोगों का अपूर्व कल्याण होगा। अनेक लोग भव-संसरण से विमुक्त होंगे। परंतु इसके तत्काल बाद वह रोया। पूछे जाने पर उसने बताया कि वह इसलिए रोया कि अत्यंत वृद्ध होने के कारण इसके बुद्ध बनने तक वह मर चुका होगा। मुक्ति के लिए जिस विद्या की यह खोज करेगा, उससे मैं वंचित रह जाऊंगा।

तभी उसे अपने भांजे नालक का स्मरण हुआ जो कि उस समय प्रौढ़ हो चुका था। कालदेवल ने उसे सूचना भिजवायी कि वह तत्काल घरबार छोड़ कर श्रमण बन जाय और साधना में जुट जाय, जिससे कि इस शिशु के सम्यक संबुद्ध बनने पर इस लायक हो जाय कि इसकी शरण ग्रहण कर, इसकी विद्या सीख सके और परिणामस्वरूप जन्म-मरण के भव-संसरण से सदा के लिए मुक्त हो सके।

मामा का संदेश पाते ही नालक ने भरा-पूरा घर-परिवार त्याग दिया और श्रमण हो गया। पैंतीस वर्ष बाद भगवान ने जब ऋषिपत्तन मृगदाव में धर्मचक्रप्रवर्तन का उपदेश दिया और अपने पांच साथियों को भवमुक्त होने का मार्गदर्शन दिया, तब वृद्ध नालक भी उनके पास पहुँचा और उनसे विपश्यना विद्या सीख कर हिमालय में जाकर तपने लगा। वह अल्पकाल में ही अरहंत हो गया और तदनंतर मृत्यु को प्राप्त हुआ। इस प्रकार ऋषि कालदेवल का सुझाव उसके काम आया।

उपरोक्त घटनाओं से स्पष्ट है कि प्रसिद्ध ब्राह्मण ऋषि होते हुए भी कालदेवल यानी असित देवल पर श्रमण संस्कृति का गहरा प्रभाव था।

वैसे असित देवल ब्राह्मण समाज में भी कम पूज्य नहीं था। श्रीमद्भगवद्गीता *(अ. १०-१३)* ने उसे देवर्षि नारद और व्यास के समकक्ष बताया है।

बालक सिद्धार्थ का प्रथम ध्यान

शाक्य गणतंत्र की हिमालय की तराई की भूमि कृषिप्रधान थी। राजा और प्रजा की आय इसी पर अवलंबित थी। अतः कृषि की प्रधानता को महत्त्व देने के लिए राजा और राजपरिषद के सदस्य खेतों पर पहली बार हल स्वयं चलाते थे। ऐसे अवसर पर उनको हल चलाते हुए देखने के लिए प्रजा के अनेक लोग एकत्र होते थे। यह उत्सव एक उल्लासपूर्ण मेला का रूप धारण कर लेता था। नाच-गान और खेल-तमाशों का वातावरण इसे और अधिक आकर्षक बना देता था। इस कारण भी इस अवसर पर लोगों की बहुत भीड़ जमा होती थी।

इस वर्ष के उत्सव में जब राजा शुद्धोदन हल जोतने का लोकप्रिय कार्य करने आये तब उस मेले में दासियों के साथ बालक सिद्धार्थ को भी साथ ले आये। मेले का आयोजन देर तक चलता रहा। अतः एक विशाल जामुन वृक्ष के नीचे, चारों ओर कनात लगा कर, उस पर सुंदर चँदोवा लगाया गया और बालक के विश्राम के लिए एक सुंदर गद्दी बिछा दी गयी। दासियां उसकी देखभाल करती रहीं। बालक को उस भीड़-भाड़ में कोई रुचि नहीं थी। उसकी आंखों में नींद घुलती देख कर, उसे वहीं सुला दिया गया।

मेले का मनोरंजन चलता रहा। जब दासियों ने देखा कि राजकुमार गहरी नींद में सो गया है तब उस मनोरंजन में भाग लेने के लिए बालक को सोया हुआ छोड़ कर वे बाहर चली गयीं।

बालक जब उठा तब आसपास किसी को न देख कर, वहीं पालथी मार कर बैठ गया। उसका अनेक जन्मों का अभ्यास था, अतः सांस के आने-जाने को जानने लगा और सहजभाव से आनापान की साधना करने लगा। यों करते-करते वह प्रथम ध्यान में समाहित हो गया।

कुछ समय बाद जब दासियां आयीं और उन्होंने बालक को ध्यानमग्न देखा तब विस्मय-विभोर हो महाराज को सूचना दी। महाराज भी तत्काल आये और यह अजूबा देख कर चकित रह गये। उन्हें राजपुरोहित असित देवल के बोल याद आये कि यह बालक साधारण नहीं है। यह महापुरुष है जो बड़ा होकर सम्यक संबुद्ध बनेगा।

महाराज ने भावविभोर होकर अपने ध्यानमग्न पुत्र को नमन किया।

चार निमित्त

राजकुमार सिद्धार्थ गौतम के बारे में यह मान्यता प्रचलित है कि जब वह राजमहल से नगर-दर्शन के लिए निकला तब उसने एक रोगी, एक जराजीर्ण वृद्ध, एक मृत व्यक्ति को और फिर एक प्रव्रजित श्रमण को देखा। इससे वह अत्यंत उद्विग्न हो उठा और उसके मन में इतना धर्मसंवेग जागा कि उसने महाभिनिष्क्रमण कर दिया, यानी वह घर से निकल पड़ा।

इस मान्यता का अर्थ यह किया जाना उचित नहीं लगता कि उसने नगर में पहली बार जाने पर ही ये चारों निमित्त देखे। यह मानना भी उचित नहीं लगता कि पिता शुद्धोदन ने उसके राजमहल में रहते हुए इन निमित्तों को न देख सकने का पूरा प्रबंध करवा दिया था। घर त्यागने के समय उसकी उम्र उनतीस वर्ष की थी। जब उसका जन्म हुआ तब उसकी माता महामाया की उम्र छप्पन वर्ष, चार माह, बीस दिन की थी। अनुमान किया जा सकता है कि उसके पिता की उम्र भी अधिक नहीं तो इतनी तो रही ही होगी। अनुमान यह भी किया जा सकता है कि माता महामाया की छोटी बहन महाप्रजावती की उम्र भी महामाया से लगभग दो-तीन वर्ष ही कम रही होगी। माता महामाया राजकुमार को जन्म देकर एक सप्ताह के भीतर स्वर्ग सिधार गयी। परंतु पिता शुद्धोदन और मौसी महाप्रजावती दोनों जीवित रहे। राजकुमार जब उनतीस (२९) वर्ष का हुआ तब तक यह दोनों अस्सी वर्ष से अधिक उम्र के हो गये थे। ऐसी अवस्था में राजकुमार ने किसी अन्य वृद्ध व्यक्ति को न भी देखा हो तब भी अपने पिता और मौसी को तो श्वेतकेशी वृद्धों के रूप में देखा ही। यह भी नहीं माना जा सकता कि इस उम्र तक उनमें से कभी कोई बीमार न हुआ हो। ये ही क्यों? राजघराने का अथवा ननिहाल का कोई व्यक्ति भी कभी बीमार अवश्य पड़ा होगा। यह भी मानना उचित नहीं है कि उनतीस वर्ष की उम्र तक उसने किसी को 'मरा हुआ' न सुना और न देखा। मौसी और पिता की मृत्यु नहीं हुई थी लेकिन राजपरिवार के अथवा ननिहाल के अन्य सदस्यों में से किसी-न-किसी की मृत्यु तो हुई ही होगी। अधिक नहीं तो शैशव अवस्था में ही अपनी जननी महामाया की हुई मृत्यु के बारे तो सुना ही होगा। इससे राजकुमार विचलित भी हुआ होगा। यह सब देख-सुन कर चिंतामग्न भी अवश्य हुआ होगा कि देर-सवेर इन अवस्थाओं में से सबको गुजरना पड़ता है।

राजकुमार को उनतीस वर्ष की उम्र तक राजमहल में ही रोक कर रखा गया। इसके पहले वह कभी नगर की ओर गया ही नहीं। इस मनगढ़ंत विवरण का मिथ्यात्व पुरातन पालि साहित्य से ही सिद्ध होता है। जब राजकुमार सम्यक संबुद्ध बन कर कपिलवस्तु लौटते हैं तथा घर-घर में भिक्षाचरण करते हैं तब यह देख कर राहुलमाता के मुँह से यह उद्गार निकलते हैं –

"ये आर्यपुत्र राजसी वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर, सोने की पालकी में बैठ कर, इसी नगर में विचरण किया करते थे। वे ही आज मुंडित होकर काषाय वस्त्र पहने हाथ में कपाल-पात्र लेकर पिंडपात के लिए विचरण कर रहे हैं।"

(विनयपिटक महावग्गट्ठकथा)

उपरोक्त घटना से सिद्ध होता है कि राजकुमार ने जब चार निमित्त देखे तब वह जीवन में पहली बार नगर निरीक्षण के लिए नहीं गये थे, बल्कि पहले भी अनेक बार जा चुके थे।

परंतु उस दिन नगर में जब एक-के-बाद-एक ये तीनों निमित्त देखे होंगे तब मन में फिर यह प्रश्न उठा होगा कि क्या सब को इन तीनों अवस्थाओं में-से गुजरना अनिवार्य है? क्या इनसे बचने का कोई उपाय नहीं है? इस चिंतन से वह अवश्य बहुत अधिक उद्विग्न हो उठा होगा।

संयोग से उसी समय उसने चौथे निमित्त के रूप में एक श्रमण को देखा। किसी श्रमण को देखना भी नितांत नया अनुभव नहीं माना जा सकता। उनतीस वर्ष तक भिक्षा के लिए राजमहल में आने वाले श्रमणों को अवश्य ही देखा होगा, क्योंकि वह श्रमण-परंपरा का राजरिवार था। श्रमणों को भिक्षादान देना उनका सहज गृहस्थधर्म था। लेकिन इस विशिष्ट परिस्थिति और तीव्र संवेग की मनोस्थिति में इस श्रमण से मिलने पर राजकुमार ने यह

निश्चय किया कि यदि जन्म-मृत्यु के भवचक्र से छुटकारा पाना है तो मुझे इसका उपाय स्वयं खोजना होगा। यह खोज घर में रहते हुए नहीं हो सकती। मुझे घर छोड़ कर ही यह खोज करनी होगी और स्वयं अपने भीतर करनी होगी। इसी प्रकार के कुछ-कुछ चिंतन उसके मन में पहले भी चलते रहे होंगे। अब इस श्रमण से भेंट होने पर उनकी पुष्टि हो गयी।

इन चार निमित्तों का यही वास्तविक महत्त्व है। पहले तीन निमित्तों से गहन संवेग जागा। इसीलिए इन तीनों को **'संवेग-निमित्त'** कहा गया और चौथे को **'पधान-निमित्त'** कहा गया, क्योंकि इसी से घर छोड़ कर मुक्ति के लिए तपने के प्रधान यानी परिश्रम का निर्णय किया।

– (धम्मसङ्गिनी निक्खेपकण्डं)

मूल तिपिटक के अनुसार पूर्वकाल के **'बोधिसत्त्व विपस्सी'** के जीवन में जब पहली बार ये चारों घटनाएं घटी थीं तब उसने गृह त्यागने का निश्चय किया था। इसी आधार पर यह मान्यता चल पड़ी होगी कि **'बोधिसत्त्व गौतम'** के जीवन में भी यही घटनाएं पहली बार घटेंगी और वह तत्काल गृह त्यागेगा। लेकिन यह सच नहीं है कि उसने ये चारों घटनाएं जीवन में पहली बार देखीं या सुनीं। परंतु ये घटनाएं जब उसने इस बार देखीं तब अत्यंत उद्विग्न हो, गृह त्यागने का निर्णय किया।

राजकुमार सिद्धार्थ ने ये चारों निमित्त जीवन में पहली बार देखे, यह कथन मान्य न हो तब भी इसमें संदेह नहीं कि उस दिन नगर में इन चारों निमित्तों को देखने के कारण ही अभिनिष्क्रमण यानी गृह-त्याग किया। इसीलिए कहा गया –

निमित्ते चतुरो दिस्वा, अस्सयानेन निक्खमि।

– (बुद्धवंस पालि, ५.२१, मङ्गलबुद्धवंसो)

– चारों निमित्तों को देख कर, घोड़े पर सवार हो, घर त्यागा।

सद्धर्म-पथिक,

स. ना. गो.

महत्त्वपूर्ण सूचना –

"बुद्ध-चारिका" की वर्तमान लेखमाला के रूप में प्रस्तुत इन कथाओं को रंगीन चित्रों के साथ पुस्तकाकार प्रकाशित कर रहे हैं ताकि चित्रों के माध्यम से पाठक वस्तुस्थिति को अधिक आसानी से समझ सकें।

'ग्लोबल पगोडा' के एक दिवसीय शिविर के लिए विशेष सूचना –

१. सभी साधकों से निवेदन है कि वे अपनी बुकिंग करा कर ही आयें ताकि दोपहर के भोजनादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

२. कृपया बिना अनुमति लिए अपने साथ किसी अन्य व्यक्ति को न लाएं। जिसने कभी दस दिवसीय शिविर पूरा नहीं किया हो, वे इस शिविर के लिए बिल्कुल न आयें।

३. अब से यदि बिना बुकिंग कराये आयेंगे तो वापस लौटाने में व्यवस्थापकों कोई संकोच नहीं होगा।

४. कृपया अपने साथ पीने के पानी की बोतल अवश्य लाएं। पीने का पानी बड़ी बोतल (२० लीटर) में उपलब्ध रहेगा। उसमें से अपनी बोतल भर कर अपने पास रख सकते हैं।

मंगोलिया की महिला जेल में विपश्यना का दूसरा शिविर संपन्न

चीन और रूस के मध्य क्षेत्र में स्थित मंगोलिया में विपश्यना के कई शिविर लग चुके हैं और वहां केंद्र निर्माण का कार्य प्रगति पर है। साधकों के व्यवहार में हो रहे सुधार को देखते हुए सरकार ने वहां की एकमात्र महिला जेल में विगत १४ से २५ मई तक दूसरे विपश्यना शिविर का आयोजन करवाया। जेल क्र. ७ में २५ महिला साधिकाओं ने भाग लिया। इनमें ७ पुरानी साधिकाएं थीं, जो कि दो वर्ष पूर्व लगे इसी जेल के प्रथम शिविर में भाग लेकर लाभान्वित और संतुष्ट हुई थीं। साधना की निरंतरता बनाये रखने के उद्देश्य से सहायक आचार्य की उपस्थिति में गत शिविर के दो सप्ताह पश्चात जेल में एक सामूहिक साधना का आयोजन किया गया, जिसमें २३ साधिकाओं ने भाग लिया और जेल सुपरिंटेडेंट ने नियमित साधना करते-करवाते रहने का आश्वासन दिया।

इस प्रकार के शिविरों से बहुजन मंगल हो! सब का कल्याण हो!

भवतु सब्ब मंगलं!

धम्मगिरि पर पालि-अंग्रेजी कोर्स

धम्मगिरि पर ८ महीने का अंग्रेजी भाषा में पालि-प्रशिक्षण शिविर चलता है जिसमें पालि की प्रारंभिक पढ़ाई होती है। अगला सत्र फरवरी २००८ में प्रारंभ होगा, जो ३१ अक्टूबर, २००८ तक चलेगा।

प्रवेश-योग्यता – जिन्होंने कम-से-कम पांच दस-दिवसीय शिविर और एक सतिपट्ठान शिविर किया हो, विगत दो वर्ष से नियमित साधना करते हों, विपश्यना विधि के प्रति पूर्णतया समर्पित हों और पांचों शीलों का कड़ाई से पालन कर सकते हों– **क्षेत्रीय आचार्य** द्वारा अनुमोदन करवा कर अपना आवेदन-पत्र भेज सकते हैं। आवेदन-पत्र – Website: www.vri.dhamma.org पर उपलब्ध है। वहां से ले करके भरें अथवा 'विपश्यना विशोधन विन्यास', धम्मगिरि से मँगा कर भरें और क्षेत्रीय आचार्य के हस्ताक्षर करवा कर ही भेजें। अन्यथा उसे अवैध माना जायगा और कोई उत्तर नहीं दिया जायगा।

वर्ष २००८ में **उच्च पालि शिक्षा (Advance Pali Course)** की पढ़ाई प्रारंभ होगी, जिसके लिए प्रारंभिक पालि सत्र पास होना आवश्यक होगा। यह सत्र भी फरवरी २००८ में आरंभ होकर, ३१ अक्टूबर, २००८ तक चलेगा।

फार्म व अधिक जानकारी के लिए **संपर्क** – व्यवस्थापक, 'विपश्यना विशोधन विन्यास', धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२४०३.

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ की गयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टीवी पर अब **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियों को विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

ग्लोबल पगोडा 'धम्मपत्तन' का आगामी शिविर

आगामी ५ से १६ दिसंबर, २००७ तक 'धम्मपत्तन' पर **पुराने साधकों के लिए** एक और शिविर निश्चित हुआ है, जिसमें पूज्य गुरुदेव के उपस्थित रहने की संभावना है। इसके लिए कृपया अपना आवेदन-पत्र इस पते पर भेजें – **पत्राचार का पता = ग्लोबल पगोडा,** ग्रीन हाउस, २रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४००-०२३. अधिक जानकारी के लिए **फोन संपर्क –** श्रीमती अमीता पारेख, फोन नं. ०२२-२६१२ २२२६, **फोन का समय-** प्रातः ११ बजे से सायं ६ बजे तक। (कृपया बिना स्वीकृति आने का कष्ट न करें।)

पगोडा-परिसर में साधकों को तपने के लिए जिस **विपश्यना केंद्र 'धम्मपत्तन'** का निर्माण हुआ है, उसमें स्थान केवल १०० साधकों के लिए है। अतः सभी साधकों से नम्र निवेदन है कि जिन्हें शिविर के लिए स्वीकृति-पत्र दिया जाय, वे ही आयें और जिन्हें स्वीकृति नहीं दी जा सकी, वे कृपया किसी प्रकार का आग्रह (दुराग्रह) न करें। अगली बार जब जगह होगी तब उन्हें भी स्वीकृति मिल सकती है।

नये उत्तरदायित्व

भिक्षु आचार्य

१. भिक्षु विनयरक्षित, हैदराबाद
2. Ven. Bhikkhu Bambarapane Assaji Thero, *Sri Lanka*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री छगनभाई परमार, सूरत
२. डॉ. जय संघवी, भुज

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१. श्री जयेश सोनी, मोडासा *गुजरात राज्य के क्षेत्रीय आचार्य एवं वडोदरा की सेवा तथा सहायक आचार्य प्रशिक्षण में प्रो. धर की सहायता*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. ब्रि. अशोक कुमार नागपाल, नोएडा (उ.प्र.)
२. श्री पी. रविंद्र रेड्डी, तालमडुगू
3. Ms. Pawinee Boonkasemsanti, *Thailand*
4. Ms. Marsha Dewar, *Canada*
5. Mr. Leon & Mrs. Yonit Yogev, *USA*

बालशिविर शिक्षक

Mrs. Laura Spranger, *USA*

दोहे धर्म के

एक एक दिन बीतते, जीवन होय अशेष।
बिना अथक पुरुषार्थ के, कर्म न होय अशेष॥

बिन प्रयत्न पूरे न हों, छोटे मोटे काम।
बिना स्वयं उद्यम किये, कहां मुक्ति का धाम?

उद्यम में पुरुषार्थ में, दिन दिन उन्नति होय।
बने सहायक धर्म के, धर्म सहायक होय॥

सतत कर्मरत ही रहे, विकल न होय उदास।
भरा रहे उत्साह मन, कभी न होय निराश॥

श्रम कर श्रम कर बावरे! श्रमिकों का संसार।
बिन श्रम रोटी ना मिले, तू चाहे भव पार॥

अपनी अपनी मुक्ति की, कुंजी अपने हाथ।
उद्यम से ताले खुलें, सध जाये परमार्थ॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोनः 2493 8893, फैक्सः 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

आतै जातै सांस पर, रवै निरंतर ध्यान।
सहज सांस री सजगता, साधन आनापान॥

अहोभाग! साधन मिल्यो, पावन आनापान।
पग पग चलतां, राजपथ, पूगां पद निरवाण॥

पर दरसन पीड़ा जगै, स्वदरसन सुख होय।
सांस देखतां देखतां, स्वदरसन ही होय॥

बारै बारै भटकतो, देख्यो दुखी जहान।
सांस सहारै उतरग्यो, भीतर सुख री खान॥

साधक तेरो हो भलो! हो मंगळ कल्याण।
सांस देखतां देखतां, द्रढ हो ज्यावै ध्यान॥

सांस देखतां देखतां, साच प्रगटतो जाय।
साच देखतां देखतां, परम साच दिख ज्याय॥

देबेनरा मून्दड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष 2551, कार्तिक पूर्णिमा,** 24 **नवंबर, 2007**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71.** Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org